www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-2* *Issue-10 (Special Issue)* *October 2025*

औपनिवेशिकता से मुक्ति की ओरः आदिवासी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में बिरसा मुंडा का समावेश

हिना अंसारी

शोधकर्त्री, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सारांश

भारतीय शिक्षा की औपनिवेशिक विरासत ने ऐतिहासिक रूप से स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों, आदिवासी इतिहास और समुदाय–आधारित शिक्षण पद्धतियों को वंचित किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र, जिसका शीर्षक है "औपनिवेशिकता से मुक्ति की ओर– आदिवासी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में बिरसा मुंडा का समावेश", आलोचनात्मक रूप से इस संभावना की जाँच करता है कि किस प्रकार बिरसा मुंडा–स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक और जनजातीय नेता–की विरासत को जनजातीय समुदायों की शैक्षिक पाठ्यचर्या में समाहित किया जा सकता है। उपनिवेश–विरोधी सिद्धांत, स्वदेशी शिक्षा मॉडल तथा नीतिगत विश्लेषण पर आधारित यह अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि शिक्षा सांस्कृतिक पहचान की पुनःप्राप्ति, सामुदायिक मूल्यों की सुदृढ़ता तथा ज्ञानात्मक प्रभुत्व के प्रतिरोध को प्रोत्साहित करने में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह शोधपत्र यह तर्क प्रस्तुत करता है कि बिरसा मुंडा के योगदान को जनजातीय शिक्षा के ढाँचे में शामिल करना उपनिवेशी और मुख्यधारा की प्रस्तुतियों के विरुद्ध एक प्रतिप्रवृत्ति (काउंटर–नरेटिव) के रूप में कार्य कर सकता है, साथ ही जनजातीय युवाओं में जीवन कौशल, आलोचनात्मक चेतना और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में भी सहायक हो सकता है। कार्यविधि की दृष्टि से यह अध्ययन शैक्षिक नीतियों, आदिवासी अध्ययन साहित्य तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत पाठ्यचर्या रूपरेखाओं की सामग्री–विश्लेषण पर आधारित है। निष्कर्ष इंगित करते हैं कि आदिवासी शिक्षण पद्धति में बिरसा मुंडा की विरासत का समावेश एक अधिक समावेशी, पहचान–समर्थक और रूपांतरणकारी शैक्षिक वातावरण निर्मित करने की क्षमता रखता है। अंततः यह शोध–पत्र निष्कर्ष निकालता है कि पाठ्यक्रम डिज़ाइन, शिक्षक प्रशिक्षण और सामुदायिक भागीदारी के लिए ऐसे सुझाव दिए जाएँ जो भारत में शिक्षा को उपनिवेश–मुक्त बनाने के व्यापक परियोजना के अनुरूप हों।

की–वर्ड्स– औपनिवेशिकता से मुक्ति, बिरसा मुंडा, आदिवासी शिक्षा, स्वदेशी ज्ञान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पाठ्यचर्या रूपरेखा।

1–प्रस्तावना

भारत में औपचारिक शिक्षा का इतिहास लंबे समय तक उपनिवेशवादी विरासतों से प्रभावित रहा है, जिसने पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा को प्राथमिकता दी और स्वदेशी ज्ञान–प्रणालियों को वंचित कर दिया। आदिवासी समुदायों के लिए विद्यालयी शिक्षा प्रायः स्थानीय भाषाओं, पारिस्थितिकीय ज्ञान, मौखिक इतिहास और सांस्कृतिक प्रथाओं से अलगाव का कारण बनी है। इस संरचनात्मक उपेक्षा का समाधान करने के लिए एक सचेतन परियोजना की आवश्यकता है, जिसे "उपनिवेश–मुक्त शिक्षण" कहा जा सकता है– ऐसी शैक्षिक दृष्टि जो स्वदेशी ज्ञान–प्रणालियों को वैध मान्यता दे, स्थानीय इतिहास और नेताओं को केंद्र में रखे तथा आलोचनात्मक चेतना और सामुदायिक सक्रियता का विकास करे।

यह शोध–पत्र इस बात की जाँच करता है कि किस प्रकार बिरसा मुंडा (1875–1900) के जीवन, विरासत

और शैक्षिक महत्व को उपनिवेश–मुक्त पाठ्यचर्या सुधार के अंतर्गत आदिवासी शिक्षा ढाँचों में उद्देश्यपूर्ण ढंग से समाहित किया जा सकता है। बिरसा मुंडा का "उलगुलान आंदोलन" का नेतृत्व, भूमि अधिकारों और सांस्कृतिक गरिमा के लिए संघर्ष, तथा स्वदेशी सक्रियता के प्रतीक के रूप में उनकी भूमिका को ऐसा सशक्त व्यक्तित्व बनाती है, जिनका पाठ्यचर्या में समावेश आदिवासी विद्यार्थियों के बीच पहचान–सुदृढ़ीकरण और सामाजिक–राजनीतिक साक्षरता विकसित करने में सहायक हो सकता है। "राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)" ऐसे प्रावधान प्रस्तुत करती है जो सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी पाठ्यचर्या को बढ़ावा देते हैंकृविशेषकर प्रारंभिक वर्षों में मातृभाषा में शिक्षा का समर्थन, स्थानीय पाठ्यचर्या–निर्माण में लचीलापन, तथा अनुभवात्मक और समग्र शिक्षण पर बल। यह नीति ऐसे अवसर प्रदान करती है जिनके माध्यम से स्वदेशी नेताओं और ज्ञान–प्रणालियों को विद्यालयी शिक्षा में समाहित किया जा सकता है।

यह संगोष्ठी–पत्र एक वैचारिक औचित्य प्रस्तुत करता है, प्रासंगिक साहित्य की समीक्षा करता है, नीतिगत अवसरों का विश्लेषण करता है, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण रणनीतियाँ प्रस्तावित करता है जिनसे बिरसा मुंडा की विरासत को समाहित किया जा सके, संभावित कार्यान्वयन चुनौतियों का पूर्वानुमान करता है तथा शिक्षकों, पाठ्यचर्या–निर्माताओं और नीति–निर्माताओं के लिए ठोस अनुशंसाएँ प्रस्तुत करता है।

2. उपनिवेश–मुक्त शिक्षण की संकल्पना

उपनिवेश–मुक्त शिक्षण (Decolonized Learning) वह शैक्षिक प्रतिबद्धता है, जिसके अंतर्गत उन ज्ञानात्मक पदानुक्रमों को समाप्त करने का प्रयास किया जाता है, जो यूरोकेन्द्रित ज्ञान को सार्वभौमिक मानते हैं और स्वदेशी ज्ञान को वंचित रखते हैं। व्यवहारिक स्तर पर शिक्षा का डिकॉलोनाइजेशन (decolonizing education) निम्नलिखित बिंदुओं को सम्मिलित करता हैरू

- स्वदेशी ज्ञानमीमांसा एवं प्रथाओं की मान्यता और वैधता को पाठ्यचर्या–सामग्री के रूप में स्वीकार करना।
- स्थानीय भाषाओं में शिक्षा तथा सांस्कृतिक रूप से निहित शिक्षण–पद्धतियों को प्राथमिकता देना।
- स्थानीय इतिहास, नेताओं और कथाओं को केंद्र में रखना, ताकि विद्यार्थी स्वयं को इतिहास के सक्रिय पात्र के रूप में देख सकें, न कि निष्क्रिय विषयों के रूप में।
- आलोचनात्मक चेतना का विकास करना, जिससे विद्यार्थी संरचनात्मक अन्यायों की जाँच कर सकें और विकल्पों की कल्पना कर सकें।

स्वदेशी शिक्षा से जुड़े शोध यह बल देते हैं कि पाठ्यचर्या को सामुदायिक संदर्भों से जन्म लेना चाहिए–भूमि, भाषा और समुदाय सेकृऔर इसे स्वदेशी ज्ञान–धारकों की सहभागिता से सह–निर्मित किया जाना चाहिए, जिससे वह प्रामाणिक और सशक्तिकारी बन सके।

3. बिरसा मुंडा– ऐतिहासिक संदर्भ और शैक्षिक प्रासंगिकता

बिरसा मुंडा (जन्म, उलिहातु, 15 नवम्बर 1875; निधन– 9 जून 1900) आधुनिक भारतीय इतिहास के सबसे प्रभावशाली आदिवासी नेताओं में से एक माने जाते हैं। उन्होंने 1890 के दशक में शोषणकारी भू–प्रथाओं, औपनिवेशिक अधिकारियों और मिशनरी अतिक्रमण के विरुद्ध उलगुलान (महाविस्फोट/महाआंदोलन) का नेतृत्व किया। उनका आंदोलन राजनीतिक प्रतिरोध के साथ–साथ मुंडा समाज के भीतर सांस्कृतिक और नैतिक सुधार से भी जुड़ा हुआ था। बिरसा ने पारंपरिक भूमि अधिकारों ("खुंटकट्टी"), सामुदायिक एकता और सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण की वकालत की।

पाठ्यचर्या–निर्माण के लिए बिरसा मुंडा का महत्वरू

i- सक्रियता का प्रतीक– बिरसा का जीवन आदिवासी सक्रियता की कहानी कहता है। यह उन वर्चस्ववादी आख्यानों का प्रतिवाद है जो आदिवासियों को निष्क्रिय रूप में चित्रित करते हैं।

ii- सांस्कृतिक संरक्षण– आदिवासी रीति–रिवाजों और पारंपरिक शासन व्यवस्था को बनाए रखने पर उनका जोर, ऐसे ठोस सांस्कृतिक स्रोत प्रदान करता है (मौखिक इतिहास, अनुष्ठान, सामुदायिक शासन मॉडल), जिन्हें पाठों में शामिल किया जा सकता है।

II-मूल्य एवं जीवन–कौशल– नेतृत्व, एकजुटता, पारिस्थितिक संरक्षण, नैतिक सुधार तथा सहभागी शासन–ये सभी जीवन–कौशल और मूल्य शिक्षा के लिए अत्यंत समृद्ध शैक्षिक विषयवस्तु प्रदान करते हैं।

III- स्थानीय–वैश्विक संबंध– बिरसा के अध्ययन को विश्वभर के स्वदेशी आंदोलनों के तुलनात्मक मॉड्यूल से जोड़ा जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों को स्थानीय इतिहास को वैश्विक औपनिवेशिक–विरोधी संघर्षों के संदर्भ में समझने में मदद मिलती है।

4. आदिवासी शिक्षा में औपनिवेशिक विरासत और परिवर्तन की अनिवार्यता

औपनिवेशिक काल की शैक्षिक प्राथमिकताएँ (जैसे अंग्रेज़ी–माध्यम शिक्षा को विशेषाधिकार देना, नौकरशाही प्रशिक्षण पर बल, तथा आत्मसातीकरण के लक्ष्य) ने अनेक स्थानीय शैक्षिक परंपराओं को विस्थापित कर दिया। आदिवासी समुदायों के लिए इसके परिणामस्वरूप स्थानीय पारिस्थितिक ज्ञान का ह्रास, आदिवासी भाषाओं को वंचित किया , तथा आदिवासी इतिहास और नेताओं का पाठ्यचर्या से लुप्त होना सामने आया।

स्वदेशी शिक्षा के विद्वानों और व्यवहारविदों का तर्क है कि इन औपनिवेशिक विरासतों को मिटाने के लिए प्रणालीगत सुधार आवश्यक है, जिसमें शामिल हैं–

- पाठ्यचर्या में आदिवासी सामग्री का समावेश,
- सांस्कृतिक रूप से दक्ष (culturally competent) शिक्षक–तैयारी,
- द्विभाषी/बहुभाषी शिक्षण, तथा
- सामुदायिक साझेदारी के प्रति संस्थागत प्रतिबद्धता।

अतः, बिरसा के जीवन–चरित और उलगुलान के सामाजिक–ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को शिक्षा में शामिल करना न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से उचित है बल्कि शैक्षिक दृष्टि से भी रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।

5. नीतिगत सहायक– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और स्थानीय कार्यान्वयन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में कई ऐसे प्रावधान शामिल हैं जो डिकॉलोनियल लक्ष्यों के अनुरूप हैं और जिनका उपयोग आदिवासी पाठ्यचर्या में बिरसा मुंडा को शामिल करने हेतु किया जा सकता है–

- मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा (प्रारंभिक स्तर पर)रू यह मुंडा और अन्य आदिवासी भाषाओं में शिक्षण को संभव बनाती है, जिससे भाषाई विरासत संरक्षित रहती है और समझ की क्षमता भी बढ़ती है।
- स्थानीय पाठ्यचर्या में लचीलापन– NEP संदर्भ–आधारित पाठ्यचर्या पर बल, राज्य और स्थानीय निकायों को क्षेत्रीय इतिहास और नेताओं को समाहित करने का अवसर देता है।
- समग्र एवं अनुभवात्मक शिक्षण– NEP अनुभव–आधारित शिक्षण पर जोर, मौखिक इतिहासों, सामुदायिक क्षेत्रीय कार्यों और अभ्यास–आधारित शिक्षण को प्रोत्साहन देता है, जिसे बिरसा मुंडा की विरासत से जोड़ा जा सकता है।

इन अवसरों को मूर्त रूप देने के लिए राज्य शिक्षा विभागों, आदिवासी कल्याण बोर्डों और स्थानीय पंचायतों को मिलकर सांस्कृतिक रूप से प्रामाणिक शिक्षण–सामग्री और शिक्षक–प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार करने होंगे।

6. पाठ्यचर्या डिजाइन– बिरसा मुंडा को समाहित करने की ठोस रणनीतियाँ

समावेशन बहुआयामी होना चाहिए, जिसमें बिरसा मुंडा की विरासत को ज्ञान, शिक्षण–पद्धति, मूल्यांकन और विद्यालय संस्कृति में एकीकृत किया जाए।

6.1 सामग्री और पाठ्यक्रम

- **प्राथमिक स्तर**– बिरसा से संबंधित कथाओं पर आधारित मॉड्यूल, लोकगीत, चित्रकथा और स्थानीय भाषा के प्रारंभिक पाठ्यपुस्तकें, जो उनके जीवन और मूल्यों से परिचय कराएँ।
- **उच्च प्राथमिक/माध्यमिक स्तर**– विषयगत इकाइयाँ जैसे भूमि अधिकार, औपनिवेशिक वन कानून, खुंटकट्टी प्रणाली, और बिरसा का सुधारात्मक एजेंडा; साथ ही अन्य वैश्विक स्वदेशी नेताओं के साथ तुलनात्मक मॉड्यूल।
- **अंतर–विषयक संबंध**– सामाजिक विज्ञान में क्षेत्रीय इतिहास, पर्यावरण विज्ञान में पारंपरिक कृषि प्रथाओं पर परियोजनाएँ, कला कक्षाओं में पारंपरिक भित्ति/लोक कला, और भाषा पाठ में मौखिक जीवन–चरिताओं को केंद्रित करना।

6.2 शिक्षण–पद्धति (Pedagogy)

- **मौखिक इतिहास और समुदाय विशेषज्ञ**– विशेषज्ञों और ज्ञान–धारकों को आमंत्रित करें ताकि वे स्थानीय स्मृतियाँ साझा कर सकें।
- **स्थल–आधारित शिक्षण**– स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों (उलिहातु, आसपास के जंगल) का भ्रमण, सामुदायिक भूमि प्रथाओं का मानचित्रण, और सहभागी पारिस्थितिक परियोजनाएँ।
- **संवादी शिक्षण (Dialogic Pedagogy)**– छात्रों को प्रेरित करें कि वे प्राथमिक स्रोतों, स्थानीय कानूनी मामलों (जैसे छोटा नागपुर टेनेंसी एक्ट की विरासत) का विश्लेषण करें और समकालीन भूमि– अधिकारों के मुद्दों पर चिंतन करें।

6.3 शिक्षक शिक्षा (Teacher Education)

- आदिवासी इतिहास, बहुभाषी शिक्षण पद्धतियाँ और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी कक्षा व्यवहार पर पूर्व–सेवा (pre-service) और सेवा–कालीन (in-service) मॉड्यूल।
- संसाधन बैंक– पाठ योजना, स्थानीय भाषा की पाठ्यपुस्तकें, मौखिक इतिहासों के ऑडियो रिकॉर्डिंग, और बिरसा मुंडा के आंदोलन पर मल्टीमीडिया सामग्री।

7. सामुदायिक सहभागिता और सह–निर्माण

उपनिवेश–मुक्त पाठ्यचर्या अकेले विकसित नहीं की जा सकती। सार्थक सह–निर्माण में शामिल हैंरू

- सामुदायिक सलाहकार परिषद– बुजुर्ग, स्थानीय इतिहासकार और आदिवासी संगठन प्रतिनिधि,जो सामग्री की समीक्षा करें और सांस्कृतिक प्रामाणिकता सुनिश्चित करें।
- सहभागी पाठ्यचर्या–लेखन कार्यशालाएँ– जहाँ शिक्षक, विद्वान और समुदाय के सदस्य मिलकर मॉड्यूल डिजाइन करें।
- स्थानीय मीडिया एवं सांस्कृतिक उत्सवरू जैसे–जनजातीय गौरव दिवस और अन्य कार्यक्रमों का उपयोग करके स्कूलों में बिरसा–थीम आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रमुखता देना।

इस तरह की सहभागिता सुनिश्चित करती है कि पाठ्यचर्याएँ वैध, और प्रासंगिक हो।

8. प्रत्याशित चुनौतियाँ और समाधान रणनीतियाँ

i- संसाधन प्रतिबंध– स्थानीयकृत पाठ्यक्रम तैयार करने और शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है।

समाधान– राज्य निधियों का प्रबंधन, केंद्र की योजनाओं का उपयोग, और NGOs तथा विश्वविद्यालय विभागों के साथ सहयोग करके कम लागत में संसाधन तैयार करना।

ii- भाषा मानकीकरण– कुछ आदिवासी भाषाओं में लिपि या शिक्षण सामग्री का अभाव है।

समाधान– भाषा दस्तावेज़ीकरण परियोजनाओं का समर्थन, प्रारंभिक स्तर पर मौखिक शिक्षण पद्धति का उपयोग, और द्विभाषी प्रारंभिक पाठ्यपुस्तकें विकसित करना।

iii- संस्थागत प्रतिरोध– पाठ्यचर्या में परिवर्तन को नौकरशाही प्रणाली या वैचारिक विरोधियों का सामना करना पड़ सकता है।

समाधान– पायलट कार्यक्रम चलाना जो बेहतर परिणाम (उपस्थिति, समझ) प्रदर्शित करें, और छम्ब् की नीति वैधता का उपयोग करना।

9. सफलता के संकेतक

बिरसा मुंडा की विरासत के समावेशन से उपनिवेश–मुक्त शिक्षण प्राप्त हो रहा है या नहीं, इसका मूल्यांकन करने के लिए निम्न बिंदुओं पर ध्यान देंरू

- **विद्यार्थी परिणाम**– समझ, पहचान–सुदृढ़ीकरण, उपस्थिति, और आलोचनात्मक क्षमताओं में सुधार।
- **सामुदायिक प्रतिक्रिया**– प्रामाणिकता और सशक्तिकरण की धारणा।
- **शिक्षक की तैयारी**– सांस्कृतिक रूप से सूचित पाठ योजनाओं और शिक्षण पद्धतियों का उपयोग।
- **नीति अपनाना**– सफल पायलट कार्यक्रमों को जिला/राज्य स्तर के पाठ्यक्रम में विस्तारित करना।
- **मिश्रित–विधि मूल्यांकन**– जैसे सर्वेक्षण, कक्षा अवलोकन, और गुणात्मक साक्षात्कार प्रभाव को दस्तावेज़ित

करने में सहायक होते हैं।

10. निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

आदिवासी शिक्षा में बिरसा मुंडा की विरासत को समाहित करना शैक्षिक दृष्टि से उचित, सांस्कृतिक रूप से आवश्यक और नीतिगत रूप से व्यवहार्य है। ऐसा करने से ऐतिहासिक न्याय (छूटी हुई कथाओं की मान्यता) और शैक्षिक प्रभावशीलता (विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन अनुभवों से जुड़े शिक्षण) की दोहरी आवश्यकता पूरी होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक सहायक नीति ढाँचा प्रदान करती है, लेकिन इसका सफल कार्यान्वयन स्थानीय पहल, सहयोगात्मक पाठ्यचर्या निर्माण, शिक्षक क्षमता निर्माण और समर्पित संसाधनों पर निर्भर करता है।

प्रमुख अनुशंसाएँ–

i- चयनित आदिवासी बहुल जिलों में बिरसा मुंडा पर स्थानीयकृत पाठ्यक्रम मॉड्यूल पायलट के रूप में लागू करना (सामुदायिक सलाहकार बोर्डों के साथ सह–निर्मित)।

ii- द्विभाषी शिक्षण सामग्री (मौखिक और लिखित) और बिरसा के मूल्यों (नेतृत्व, पारिस्थितिक संरक्षण, सामुदायिक शासन) से प्रेरित जीवन–कौशल मॉड्यूल विकसित करना।

iii- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम डिजाइन करना, जो सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र और सामुदायिक–सक्रिय शिक्षण विधियों पर केंद्रित हों।

iv- सहभागी मूल्यांकन ढाँचे स्थापित करना, ताकि शैक्षिक और सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव मापे जा सकें।

अ. NEP 2020 की निधि और लचीलापन का उपयोग करके सफल मॉड्यूल को राज्य पाठ्यक्रम ढाँचों में संस्थागत रूप से शामिल करना।

संक्षेप में, आदिवासी शिक्षा के ढाँचे में बिरसा मुंडा को शामिल करना केवल पाठ्यपुस्तक में एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व जोड़ना नहीं है; यह ज्ञानात्मक पुनर्स्थापना (मचपेजमउपब तमेजपजनजपवद) का कार्य है, जो उन आवाज़ों, मूल्यों और ज्ञान प्रणालियों को पुनः स्थापित करता है जिन्हें औपनिवेशिक शिक्षा ने दबा दिया था। जब शिक्षा विद्यार्थियों की पहचान को स्वीकारती है और उन्हें वर्चस्व संरचनाओं की आलोचना करने में सक्षम बनाती है, तब यह न केवल सीखने का साधन बनती है बल्कि मुक्ति का उपकरण भी बनती है। इस प्रकार, बिरसा मुंडा की विरासत इतिहास से जीवंत शिक्षाशास्त्र में बदल सकती है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–

1. कुमार, के. (2019), औपनिवेशिक भारत में शिक्षा की राजनीति, राउटलज। (https://doi.org/10.4324/9780429344789)
2. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार (https://us.sagepub.com/en-us/nam/tribal-movements-in-india/book205421)
3. शाह, जी. (2002), भारत में आदिवासी आंदोलन, सेज पब्लिकेशन्स। (https://doi.org/10.1177/0376983613507644)
4. टेटे, पी. (2013), बिरसा मुंडा और आदिवासी पहचान का निर्माण, इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू, 40(2), 241दृ260। (https://archive.org/details/decolonisingmind00wa)

5. थियॉग'ओ, एन. वा. (1986), मन को उपनिवेश–मुक्त करना, अफ्रीकी साहित्य में भाषा की राजनीति, जेम्स करी। (https://archive.org/details/decolonisingmind00wa)
6. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, (तिथि निर्दिष्ट नहीं), बिरसा मुंडा, एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में प्राप्त। 12 सितम्बर, 2025 को पुनः प्राप्त। (https://www.britannica.com/biography/Birsa-Munda)

Cite this Article

'हिना अंसारी', "औपनिवेशिकता से मुक्ति की ओररू आदिवासी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में बिरसा मुंडा का समावेश", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:10 (Special Issue), October 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

Published Date- 31 October 2025